مختصر السيرة النبوية
باللغة الهندية

सन्देशटा मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

की जीवनशैली

लेखकः

मौलाना अब्दुल खालिक़ खलीक़ रहिमहुल्लाह

अनुवादकः

अबू हबीब हसीब बस्तवी

नाम पुस्तक : मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम

लेखक : मौलाना अब्दुल खालिक़ खलीक़ रहिमहुल्लाह

अनुवादक : अबू हबीब हसीब बस्तवी

प्रकाशन : दारूलखैर फाउन्डेशन कौसा, मुंब्रा, थाने

पृष्ठ : 68

सन प्रकाशन : जून 2018

मिलने का पता : 5, लेक प्लाज़ा, दारूलखैर फाउन्डेशन

कौसा, मुंब्रा, ज़िला थाने

संपर्क न. : 9594690742

भूमिका

सर्व प्रथम मैं अपने प्रतिपालक ईश्वर का अति आभारी हूँ कि जिसने हमें यह दैवयोग प्रदान किया कि उसके निकटतम एवं सर्व प्रिय अंतिम सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जीवनशैली से संबंधित सेवा का अवसर प्रदान किया. तत्पश्चात अपने प्रिय मित्र मौलाना अब्दुल हादी मदनी पुत्र लेखक पुस्तक मौलाना अब्दुल खालिक़ खलीक़ रहिमहुल्लाह का जिन्होने अपने पिता द्वारा लिखित पुस्तक ''मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'' उर्दू के हिन्दी अनुवाद की आज्ञा प्रदान की.

हुआ यूं कि जब मैं सउदी अरब में 'अलअहसा' में आया तो कुछ ही दिनो पश्चात मेरे कुछ हितैषियों एवंश्शुभचिंतको ने अलअहसा इस्लामिक सेन्टर' नामक संस्था का परिचय कराया तथा उसके कुशल सेवाओं का संक्षिप्त मे वर्णन करते हुये मुझे उससे जुड़कर कार्य करने की सलाह दी तो मैने एक शुभचिन्तक मित्र हमद अबू मसऊद से सेन्टर तक पहुचानें का आग्रह किया जिसको उन्होने स्वीकारते हुये मुझे सेन्टर तक पहुचाने का कष्ट किया तथा प्रबंधक से भेंट एवं परिचय कराया. प्रबंधक महोदय ने संक्षिप्त में संस्था की कार्यशैली पर प्रकाश डालते हुये मुझे उर्दू, हिन्दी विभाग के कार्यालय में पहुंचा दिया. कथित कार्यालय मे मौलाना अब्दुल हादी मदनी से भेंट करके अति प्रसन्नता हुई तथा कुछ ही क्षणों मे प्रसन्नता की सीमा असीमित होने लगी जब यह

ज्ञात हुआ कि श्री मौलाना अब्दुल हादी मदनी महारे हिन्दुस्तानी होने के साथ साथ हमारे अविभाजित जनपद बस्ती के ही निवासी हैं जो अब विभाजिता पश्चात सिद्धार्थ नगर के नाम से अतिरिक्त जनपद बना दिया गया है.

मैने उनके समक्ष उर्दू, हिन्दी भाषा में सेवा की इच्छा व्यक्त की तो उन्होने अति प्रसन्नता प्रकट करते हुये तत्काल मुझे महान विद्वान इब्नुल कय्यिम अलजोज़ी की अरबी पुस्तक ''असबाबुत्त्खल्लुस मिनलहवा'' का स्वयं द्वारा उर्दू अनुवाद हिन्दी में अनुवादित करने का कार्यभार सौंप दिया. तथा साथ में अपने पिता द्वारा लिखित यह पुस्तक ''मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'' भी भेंट दिया. जिसे लाकर मैने एक ही बैठक में समाप्त कर दिया. तथा यह पुस्तक हृदय की अंधेर कोठरी तक प्रवेश कर गई. आत्मीच्छा हुई कि यदि यह पुस्तक हिन्दी में अनुवादित हो जाती तो संभवतः हिन्दी ज्ञान रखनेवालों तथा हिन्दी भाषितो हेतु वरदान साबित होती. तथा इसी बहाने अन्तिम एवं अतिप्रिय महान सन्देशटा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जीवनशैली से संबंधित सेवा का सौभाग्य मुझ अज्ञान एवं दोषी को भी प्राप्त हो जाता. अंततः अपनी यह इच्छा प्रिय मित्र मौलाना अब्दुल हादी मदनी के समक्ष प्रस्तुत कर दिया. जिस पर मौलाना ने अति प्रसन्नता एवं दुआओं के साथ आज्ञा प्रदान करदी. जो उनका मुझपर अति आभार है एवं रहेगा.

पुस्तक के संक्षिप्त में लिखने संबंधित पुस्तक के लेखक ने अपनी भूमिका में जिस घटना का वर्णन किया है तथा उससे जो परिणम निष्कासित किया है वह स्वर्ण जल से लिखने योग्य है. कि महान एवं प्रसिद्ध विद्वान मौलाना सनाउल्लाह अमृतसरी की सेवा मे एक यात्री उपस्थित हुआ उसने कहा कि मुझे यात्रा करनी है तथा मेरी रेलगाड़ी का समय अति निकटीय है एक प्रश्न करना है जिसका उत्तर संक्षिप्त एवं सम्पूर्ण हो मौलाना ने पूछा प्रश्न क्या है कहा सूरह युसुफ की ऐसी व्याख्या कीजिये कि रेल भी न छूटे तथा व्याख्या भी सम्पूर्ण हो जाये. मौलाना ने तत्काल उत्तर देते हुये कहा 'पीरे बूद पिसरे दाश्त, गुम करद बाज़ याफ्त'. कि एक वृद्ध थे उनका एक पुत्र था गुम हो गया, फिर वापस मिल गया. आपने इतनी सर्वागीण व्याख्या की प्रश्न कर्ता को सम्पूर्ण रुप से तसल्ली हो गई एवं अति प्रसन्न होकर सलाम करके अपनी राहली. यह व्याख्या अति सटीक तथा सतप्रतिशतश्शुद्ध एवं सत्य है. कि आज के इस व्यतीत जीवन में जिसमे लोगों के पास मरने का भी समय नही तो कौन विस्तारित एवं मोटी पुस्तकों के पठन हेतु समय देगा–

अतएवं यह पुस्तक उसी का अनुवाद है जो जनता के मध्य स्वीकारता प्राप्त कर चुकी है. ईश्वरसे विनती है कि असल की भॉति इस नक्ल को भी स्वीकारता प्रदान करे तथा लेखक के उपर अपनी क्षमादान की वर्षा फरमाये एवं स्वर्ग में उनके स्थान को उच्च

श्रेणी प्रदान करें. तथा उनके तमाम संबंधितों पर अपनी कृपा फरमाये. तथा अनुवादक की इस सेवा को स्वीकारता एवं बार बार ऐसे सुसेवाओं का अवसर प्रदान करे. तथा उसके माता पिता को दोषमुक्त फरमाकर करुणदान फरमाये एवं स्वर्ग मे उच्च श्रेणी का स्थान नियुक्त फरमायें एवं अनुवादक तथा पाठक सर्व हेतु इस पुस्तक को सत्यदूंत के सत्य मार्गो पर अग्रसित होने का कारण बनाये. आमीन–

अंत में प्रायमरी स्तर के प्रबंधको एवं प्रधानाध्यापकों से अनुरोध है कि यदि इसे अपने पाठकीय पुस्तकों मे सम्मिलित कर लें तो इस दोषी पर आपका अति आभार होगा. तथा विद्यार्थीयों एवं शिक्षकों को इससे लाभान्वित होने का स्वर्ण अवसर प्राप्त होगा.

नोट : प्रिय ज्ञानी पाठकों से अनुरोध है यदि कोई टूटी प्राप्त है, तो सूचित करने की कृपा करें ताकि द्वितीय प्रकाश्न में उसे ठीक किया जा सके.

शुभ कामनाओं सहित

अनुवादक –

हसीब बस्तवी

गया जीतपुर – बस्ती

पाठ 1

कलिमह तैइबा (पवित्र कलिमह)

हम समस्त मुस्लिम गण इस पवित्र कलिमह (कथन) को स्वीकार कर उसकी घोषणा करते है तथा साक्षातकार करते है! कलिमह के दो भाग है :–

प्रथम भाग – लाइलाह इल्लल्लाहू لا إله إلا الله

इसका अर्थ यह है कि अल्लाह (ईश्वर) के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नही सर्व पूजाओं योग्य मात्र वही एक है. किसी अन्य हेतु किसी प्रकार की पूजा जायज़ (उचित) नही –

द्वितीय भाग – मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह – محمد رسول الله

अर्थात – मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईश्वर के सत्य सन्देशटा है उसका संदेश लाने वाले हैं – आपकी सर्व कथायें सत्य हैं आपका जीवन हमारे लिये आकर्षक नमूना है– आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों का पालन करना तथा वर्जिताओं से वर्जित रहना हम पर आवश्यक है तथा हमको ईश्वरीय पूजा हेतु वही मार्ग ग्रहण करना चाहिये जिस प्रकार आपने सिखाया अथवा करके दिखाया हैं –

कलिमह का यही द्वितीय भाग इस पुस्तक का नाम है तथा इस में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शुभ जीवन को संक्षिप्त में प्रस्तुत किया गया है.

प्रश्न :

1. पवित्र कलिमह क्या है ?
2. लाइलाह इल्लल्लाह का अर्थ क्या है ?
3. मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह का अर्थ क्या है ?
4. इस पुस्तक का नाम क्या है तथा इसमे क्या प्रस्तुत किया गया है?

पाठ 2

जन्म

हमारे सन्देशटा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जन्म बसंत ऋतु मे मक्का नामी नगर में हुआ. दिवस सोमवार का था – 9 रबीउल अव्वल सन 1 आमुल फील – (जिस सत्र मे हाथी वाली घटना घटी थी) 22 अप्रैल 571 ईसवी की तारीख थी. भोर के बाद सूर्योदय से पहले का समय था.

आप अपने माता, पिता की एकलौती संतान थे. आप के जन्म से कुछ दिवस पहले ही आपके पिता अब्दुल्लाह का देहान्त हो गया था. दादा जिनका नाम अब्दुल मुत्तलिब था अभी जीवित थे जब उन्हे अपने प्रिय पौत्र के जन्म का शुभ संन्देश मिला तत्काल सीधे घर आये, अपने प्रिय पुत्र अब्दुल्लाह की अनमोल निशानी को सीने से लगाया, तत्पश्चात हरमे काबा शरीफ मे लाये. भाग्यशाली तथा लंबी आयु की ईश्वर से कामना एवं विनती की, सातवें दिन अक़ीक़ा (बच्चों की जन्म पर जानवरों को बलिदान देना) किया. संपूर्ण कुटुम्ब को निमंत्रित किया और नाम मुहम्मद रखा, आपकी माता आमिना ने आपका नाम अहमद रखा. कुरआन मजीद में इन दोनो नामों का वर्णन है –

अरब की रीति के अनुसार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दूध पिलाने हेतु बनूसअद कुटुम्ब की एक महिला हलीमा पुत्री अबू जुअैब को समर्पित किया गया– आप सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम की उन्नति एवं बढ़ोत्तरी इस प्रकार तीव्रता से हुई कि आप दो वर्ष पूरा होने से पहले ही सुशक्ति एवं स्वस्थ हो गये. दाई हलीमा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को लेकर आपकी माता के पास आईं परन्तु आपकी पावनता एवं बरकतें देखती रही थीं अतएवं पुनः आग्रह कर वापस ले गईं –

एक दिन की बात है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चार वर्ष के हो चुके थे अपने दूध संघी भाई के संग खेल रहे थे कि दो व्यक्ति सफेद वस्त्र पहने हुए आये और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सीना चीर दिया – हृदय निकाला नीरा जम जम से उसे धोया तथा पुनः अन्दर उसे रख दिया एवं नयनों से ओझल हो गये. परन्तु सीने पर कोई निशान नही था – दाई हलीमा ने इस वाक्य के पश्चात आप स.अ.वसल्लम को आपकी माता के पास वापस कर दिया.

प्रश्न –

1. मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जन्म किस नगर में किस दिन हुआ ?
2. मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के माता एवं पिता का नाम बताओ ?
3. दादा अब्दुल मुत्तलिब ने अपने पोते काश्शुभ संदेश सुनकर क्या किया ?

4. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की माता ने आपका क्या नाम रखा?
5. मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बनू सअद की किस महिला ने दूध पिलाया?

पाठ – 3

वंश सूत्र

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वंश सर्व संसार से सर्वोच्च एवं सर्वोत्तम है. जैसा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया– अल्लाह तआला ने इस्माईल अलैहिस्सलाम की संतानों में किनाना को चुना, किनाना से कुरैश को, कुरैश से बनी हाशिम को, तथा बनी हाशिम से मुझे चुना – (सहीह मुस्लिम)
आप का विस्तारित वंश सूत्र निम्न लिखित है –

मुहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह पुत्र अब्दुल मुत्तलिब पुत्र हाशिम पुत्र अब्दे मनाफ पुत्र कुसई पुत्र किलाब पुत्र मुर्रह पुत्र कअब पुत्र लुवइ पुत्र गालिब पुत्र फिहर (कुरैश) पुत्र मालिक पुत्र नज़र पुत्र किनाना पुत्र खोजैमा पुत्र मुदरिका पुत्र इलियास पुत्र मुज़र पुत्र निज़ार पुत्र मअदद पुत्र अदनान पुत्र उदद पुत्र जैद पुत्र बर्री पुत्र इसमाईल पुत्र इब्राहीम अलैहिस्सलाम –

अदनान पुत्र ऊदद पुत्र हुमैसिअ पुत्र सलामान पुत्र औस पुत्र बूज़ पुत्र क़मवाल पुत्र उबैय पुत्र अव्वाम पुत्र नाशिद पुत्र हज़ा पुत्र बलदास पुत्र यदलाफ पुत्र ताबिख पुत्र जाहिम पुत्र नाहिश पुत्र माखी पुत्र ऐकी़ पुत्र अबकर पुत्र ऊबैद पुत्र अददुआ पुत्र हमदान पुत्र सम्बर पुत्र यसरबी पुत्र यहजन पुत्र यलहन पुत्र अरअवी पुत्र ऐज़ी पुत्र दीशान पुत्र अैसिर पुत्र अक़नाद पुत्र अयहाम पुत्र मक्सर पुत्र नाहिष पुत्र ज़ारह पुत्र सुम्मा पुत्र मुज्ज़ा पुत्र औस पुत्र इराम पुत्र

कैदार पुत्र इसमाईल पुत्र इब्राहीम अलैहिस्सलाम पुत्र तारुह (आज़र) पुत्र नाहूर पुत्र सारूअ पुत्र राऊ पुत्र फालिख पुत्र आबिर पुत्रश्शालिख पुत्र अरफखशज़ पुत्र साम पुत्र नूह पुत्र लामिक पुत्र मतूशलह पुत्र अखनूख (इद्रीस अ.) पुत्र यरद पुत्र महलाईल पुत्र क़ीनान पुत्र आनूशह पुत्रश्शीष पुत्र आदम अलैहिस्सलाम –

प्रिय संदेष्टा सल्लल्लाहु अलैहि वस्सल्लम का वंशसूत्र अदनान तक सर्वमान्य है किन्तु अदनान के पश्चात विवादित है. परन्तु इसमें कोई विवाद नहीं कि अदनान का वंश सूत्र इसमाईल पुत्र इब्राहीम से जाकर मिल जाता है. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की माता का वंश सूत्र किलाब पुत्र मुर्रह पर जाकर आपसे मिल जाता है – अर्थात आमिना पुत्री वहब पुत्र अब्दे मनाफ पुत्र जोहरा पुत्र किलाब पुत्र मुर्रह –

प्रश्न –

1. अदनान तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वंशसूत्र बताओ?
2. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की माता का वंश सूत्र आपसे किस पुस्त मे जाकर मिलता है ?
3. मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वंश में किन दो महान संन्देष्टाओं का नाम आता है ?

पाठ 4

संबन्धी

माता – आमिना

पिता – अब्दुल्लाह

दादा – अब्दुल मुत्तलिब

दादी – फातिमा पुत्री उमर पुत्र आइद पुत्र इमरान

नाना – वहब पुत्र अब्दे मनाफ

नानी – बर्रा पुत्री अब्दुल उज्जा पुत्र अब्दुद्दार

चाचा –

1 हारिष 2 जुबैर 3 हूजल 4 ज़िरार

5 मकूम 6 अबू लहब 7 अब्बास (ईमान लाये)

8 हमजा (ईमान लाये) 9 अबू तालिब

10 अब्दुलकाबा 11 कुषम

फूफियां –

1 उम्मे हकीम बैज़ाअ 2 उमैमा 3 आतिका

4 सफिया (ईमान लायी) 5 बर्रा 6 अरवा

दुध संबन्धी पिता –

1 अबू लहब चाचा

2 अबू कबशा हारिष पुत्र अब्दुल उज्जा

दुध संबन्धित मातायें –

1. सुवैबा – अबू लहब द्वारा स्वतन्त्रता प्रदान की गई लौण्डी
2. हलीमा सअदिया पुत्री अबू जुअैब
3. सअदिया (हलीमा के अतिरिक्त) जिनके सूत्रो से हमज़ा दूध संबन्धी भाई थे.

दुध संबन्धित भाई गण :–

1. मसरूह पुत्र सुवैबा
2. हमज़ा पुत्र अब्दुल मुत्तलिब
3. अबु सलमा पुत्र अब्दुल असद मखजूमी
4. अब्दुल्लाह पुत्र हारिस पुत्र अब्दुल उज्जा
5. अबू सुफियान पुत्र हारिस पुत्र अब्दुल मुत्तलिब.

दुध संबन्धी बहनें :–

1. उनैसा
2. जुदामा उर्फ शैमा

गोद खिलाने वालियाँ :–

1. जुदामा उर्फ शैमा
2. बरकह उम्मे ऐमन

प्रश्न :

1. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कितने चचा ईमान लाये उनके नाम क्या हैं ?
2. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दूध संबन्धी माताओं का नाम बताओ ?
3. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कौनसे चाचा हैं जो आपके दूध संबन्धी भाई भी है ?
4. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गोद खिलाने वालियों के नाम बताओं ?

पाठ 5

आकार

शुभ कद न अधिक लम्बा न नाटा, चेहरा कोमल उज्जवल, सर के बाल थोड़ा घुंघरीले, रंग गोरा चमकदार, दोनो भवें काली मिली हुई, नाक थोड़ी ऊँची, गाल सफेद गोलाई में, मुख चौड़ा, दांत मोती समान पतले अलग अलग, सीने से ढोढ़ी तक बालों की एक पतली सी धारी. चौड़ा सीना तथा पेट से कुछ उभरा हुआ, शरीर पतला न मोटा सन्तुलित,श्शुभ गर्दन ऊँचा, जोड़ की हड्डियाँश्शक्तिशाली एवं मोटी, सीना बालों से खाली, बाहों तथा कांधों पर बाल, हथेलियाँ चौड़ी कोमल, लम्बी कलाई, घनी दाढ़ी, सुरमगीं आँखें, उंगलियाँ लम्बी, तालू गहरे कि धरती को न लगें, आप चलते तो ज्ञात होता कि किसी ढलान भूमि पर चल रहे हैं, अंतिम आयु में सर तथा दाढ़ी के कुल 20 बाल सफेद थे. पसीना मोती समान निष्कासित होता था, दोनो कांधों के मध्य सन्देशटा होने की मुहर कबूतरी के अण्डे की भाँति उभरा हुआ माँस था उसमें से मुश्क की सुगंध फूटती थी. लटें कान की लव से आगे न बढ़ती थी. कंघी करते समय मांग स्वंय निष्कासित हो जाती. भवें धनुष समान झुकी हुई, एवं काले बालों से भरी हुई आपस में मिली हुई थीं.

अंततः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर्व शुभ अंग अति सुन्दर एवं संतुलित थे, संसार की रचना से लेकर प्रलय तक

जितने मनुष्य जन्म लिये अथवा लेंगे हमारे शुभ सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन सबसे अधिक संतुलित, स्वस्थ एवं सुन्दर थे.

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सौन्दर्य चेहरा सूर्य के समान उज्जवल एवं प्रकाश शील था. जो कोई भी आपको देखता यही कहने पर विवश था कि ऐसा सुन्दर कभी नहीं देखा.

प्रश्न –

1. संक्षिप्त में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आकार बताओ?
2. सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दाढ़ी कैसी थी?
3. सन्देशटा होने की मुहर के विषय में क्या जानते हो?
4. सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखने वाला क्या कहने पर विवश होता?
5. अंतिम आयु में सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर तथा दाढ़ी के कितने बाल सफेद थे?

पाठ 6

बचपन एवं जवानी

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जन्मपूर्व ही आपके पिता का देहान्त हो चुका था. अभी 6 वर्ष के ही थे कि माता की ममता से भी वंचित हो गये. माता का देहान्त मक्का एवं मदीना के बीच 'अबवा' नामक स्थान पर उस समय हुआ जबकि मदीना मे आपके मामू के घर से लौट रही थीं – उसके पश्चात दादा अब्दुल मुत्तलिब ने आपका पालपोश किया. परन्तु जब आप 8 वर्ष के हुये तो वह भी संसार को त्याग कर प्रलय की यात्रा के यात्री हो गये– अंततः चाचा अबू तालिब ने पाल पोश किया– 12 वर्ष की आयु में दयालु चाचा के संग ''शाम'' (सीरिया) नामक देश की यात्रा पर गये– उसी यात्रा मे ''बुहैरा'' राहिब (ईसाई ज्ञानी) की तीव्र एवं दूर दर्शित दृष्टि आप पर पड़ी और उसने अबू तालिब को सुझाव दिया कि आपको ''शाम'' में न घुमायें अन्यथा यहुदियों की ओर से खतरा है तो उन्होने अपने कुछ नौकरों के संग मदीना वापस पहुँचा दिया. 25 वर्ष की आयु में एक व्यापारिक संगठन को लेकर ''शाम'' की यात्रा की. वापसी में ख़दीजा पुत्री खुवैलद रज़ियल्लाहु अन्हा से विवाह हुआ.

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नेकी सत्यता, तथा धरोहर रक्षा की इस प्रकार प्रसिद्धता थी कि लोग आपको नाम लेकर नही बल्कि सादिक़ व अमीन (सत्याधिक व धरोहर रक्षक) कहकर पुकारते थे. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदिरा को कभी मुंह न लगाया. स्थानों की बलि न खाया. मूर्तियों हेतु मनाये

जानेवाले त्योहारों मेलों में कभी भाग नहीं लिया– यहाँ तक कि उनके नामों की सौगंध सुनना भी आपको पसंद न था– न झूठ बोलते न झूठी सौगंध खाते, न हत्या व दंगा पसंद करते न कदापि किसी बुराई की ओर मुंह किया. लोग अरब के उस गंदे वातावरण में आपको देखते तथा सम्मान करते. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने कुटुम्ब में सर्वाधिक विनम्र, साहसी, सत्यकथक स्वच्छ मन, मस्तिष्क अकलंकित यौनि के मालिक थे. नेक हृदय वचन बद्ध तथा निर्धनों एवं दुर्बलों की सहायता करते स्वयं दुख उठाकर दूसरो कों सुख पहुचाते– संक्षिप्त में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सर्व सुस्थित, उच्च व्यवहार एव सर्वोत्तम स्वभाव की कान थे.

प्रश्नः

1. जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की माता का देहान्त हुआ उस समय आपकी आयु क्या थी ?
2. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दादा का देहान्त कब हुआ तथा उसके पश्चात आपका पाल पोश किसने किया ?
3. मक्का वाले सन्देशटा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नाम लेकर पुकारने बजाये क्या कहकर पुकारते थे?
4. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने कुटुम्ब के बीच कैसे स्वभाव के मालिक थे ?

पाठ 7

पवित्र पतनिया

शुभ संदेश सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अनेक समय मे धार्मिक आवश्यकतानुसार ग्यारह 11 स्त्रियों से विवाह किया. जिनके शुभनाम एवं विवाह दिनांक निम्न लिखित हैं.

(1) ख़दीजा पुत्री खुवैलद रज़ियल्लाहु अन्हा

ये कुरैश कुटुम्ब की महिला हैं तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रथम पत्नी हैं इनके जीवनकाल में आपने कोई अन्य विवाह नही किया. जब यह विवाह हुआ उस समय आपकी आयु 25 वर्ष तथा ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की आयु 40 वर्ष की थी. ये आपकी निकाह मे 25 वर्ष जीवित रहीं.

(2) सौदा पुत्री ज़मआ रज़ियल्लाहु अन्हा –

ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की मृत्यु के पश्चात सन्देशटा घोषित होने के दसवें वर्षश्शव्वाल के महीने में इनसे सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने विवाह किया. यह भी कुरैशी महिला थी, इनकी मृत्यु 'मदीना' मेंश्शव्वाल सन 54 हिजरी में हुई.

(3) आइशा सिद्दिक़ा पुत्री अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा–

इनसे आपने (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सन्देशटा होने के 11 वे वर्ष शव्वाल के महिने में विवाह किया. उस समय इनकी

आयु 6 वर्ष की थी. फिर शव्वाल सन 1 हिजरी में इनकी विदाई हुई उस समय इनकी आयु 9 वर्ष हो चुकी थी तथा यें कुँवारी थीं–

आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के अतिरिक्त किसी अन्य कुँवारी महिला से आपने विवाह नहीं किया. यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सर्वाधिक प्रिय पत्नी थीं तथा उम्मत की महिलाओ में बिनाशर्त सर्वाधिक समझदार एवं धार्मिक ज्ञान वाली थी. आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की मृत्यु मदीना में सन 57 हिजरी मे हुई –

(4) हफ्सा पुत्री उमर फारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा –

यह भी कुरैशी महिला हैं इनके पति की मृत्योपरान्त सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सन 3 हिजरी में इनसे विवाह किया सन 54 हिजरी में मदीने मे मृत्य हुई –

(5) ज़ैनब पुत्री खुजैमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा –

उहद नामी युद्ध में इनके पति के शहीद होने के बाद सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सन 4 हिजरी मे इनसे विवाह किया तथा यह मात्र 8 महीने आपकी विवाहिता रहकर जीवित रहीं.

(6) उम्मे सलमा हिन्द पुत्री अबू उमय्या रज़ियल्लाहु अन्हुमा

यह भी कुरैशी महिला हैं इनके पति अबू सलमा की मृत्योपरान्त शव्वाल सन 4 हिजरी में इनका विवाह सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हुआ 59 हिजरी में मृत्यु हुई.

(7) ज़ैनब पुत्री जहश रज़ियल्लाहु अन्हा

इनका विवाह ज़ीक़ादा सन 5 हिजरी या उससे कुछ पूर्व हुआ तथा इनका विवाह आकाश पर ही हुआ जिस पर वह सदैव गर्व किया करती थीं जिसका वर्णन शुभ कुर्आन मे पर्याप्त है. (सूरह अहज़ाब न.37)

(8) जोवैरिया पुत्री हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा

यह बनू मुस्तलिक कुटुम्ब के प्रधान की पुत्री थीं युद्ध में बंदी बनकर आई थीं सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नेश्शाबान सन 5 हिजरी या सन 6 हिजरी में इनको अपनी विवाहिता बनाया. इनके विवाह से इनके कुटुम्ब के सैकड़ों लोगों को स्वतंत्रता मिली.

(9) उम्मे हबीबा रमला पुत्री अबू सुफियान रज़ियल्लाहु अन्हुमा

यह भी कुरैशी महिला हैं इनका पति ''हबशा'' की हिजरत के बाद इसलाम धर्म को त्याग कर विनाश युक्त हो गया तो सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सन 7 हिजरी मे इनसे विवाह कर लिया.

(10) सफिय्या पुत्री हुयै पुत्र अखतब रज़ियल्लाहु अन्हा

ईश्वरीय सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इनका विवाह ख़ैबर पर विजय प्राप्ति के बाद हुआ सन 50 हिजरी में इनकी मत्यु हुई.

(11) मैमूना पुत्री हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा

इनसे ईश्वरीय सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ीक़ादा सन 7 हिजरी मे विवाह किया सन 61 हिजरी मे मत्यु हुई.

यह कुल 11 पतनियाँ हुईं जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विवाहिता हुईं तथा आपके संग रहीं इनमें से 6 कुरैशी हैं बाकी सभी अरबी तो हैं परन्तु कुरैशी नहीं. इनमें से 2 पतनियों ख़दीजा पुत्री खुवैलद एवं ज़ैनब पुत्री खुजैमा का देहान्त आपके जीवनकाल में ही हो गया थाश्शेष आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद तक जीवित रहीं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम पतनियाँ सर्व मुस्लिम गण की माँ होती है.

प्रश्न –

1. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुल कितनी महिलाओं से विवाह किया ? सबके नाम बताओ ?
2. आप की पवित्र पत्नियाँ मुसलमानों की कौन होती है ?
3. ईश्वरीय सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सर्व प्रथम पत्नी कौन हैं ? तथा सर्वाधिक प्रिय कौन हैं ?
4. सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वह कौनसी पतनी हैं जिनका विवाह आकाश पर हुआ था?
5. आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से संबंधित तुम्हें क्या ज्ञात है?

पाठ 8

संतान

प्रिय सन्देशटा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सर्व सन्तान ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से हुई जिसका संक्षिप्त विवरण निम्न है.

2 पुत्र

1– कासिम

2– अब्दुल्लाह जिनका लकब तैयब ताहिर था.

4 पुत्रियाँ

1–ज़ैनब 2– रूक़य्या 3– उम्मे कुलसूम

4–फातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन)

हाँ एक पुत्र और थे जिनका नाम इब्राहीम था जो कि ''मिस्र'' के राजा द्वारा भेंट की गई लौण्डी 'मारिया क़िबतिया'' की कोख से जन्मे थे. इस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम द्वारा कुल सात संतानो ने जन्म लिया 3 पुत्र 4 पुत्रियाँ पुत्रगण बालअवधि में ही मृत्य कर गये शे किन्तु पुत्रियाँ जीवित रहीं तथा बड़ी होकर विवाहिता हुईं.

(1) ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा

इनका विवाह इनके मौसियावत भाई अबुलआस पुत्र रबीअ से हुआ. अबुल आस मुसलमान हो गये थे तथा ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा अंतिम तक इनके साथ रहीं सन 8 हिजरी में मृत्यु हुई.

(2) रूक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हा

इनका विवाह उतबा पुत्र अबूलहब से पूर्व इसलाम हुआ परन्तु विदाई नहीं हुई थीं. सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुख पहुचाने हेतु अबूलहब ने 'तलाक' दिलवादी तदोपरान्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनका निकाह (विवाह) उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु से कर दिया

(3) उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा

इनका विवाह भी पूर्व इस्लाम अबूलहब के दूसरे पूत्र से हुआ था. अबूलहब ने इनको भी 'तलाक' दिलवादी. रुकैया रज़ियल्लाहु अन्हा के देहान्त पश्चात सन 3 हिजरी में सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इनको भी उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु के निकाह मे दे दिया. इसी कारण उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु जुन्नूरैन कहलाये .

(4) फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा

इनका विवाह हिजरत के दूसरे साल अली रज़ियल्लाहु अन्हु से हुआ यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सबसे छोटी पूत्री थीं सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु का दुख आपकी सन्तान में मात्र इन्ही को झेलना पड़ा. आप सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम की मृत्यु के पश्चात किसी ने इनको हंसते नहीं देखा. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद मात्र 6 महिने जीवित रहीं. रमज़ान सन 11 हिजरी मे 24 वर्ष की आयु में मृत्य हुई, जैनब, हसन, हुसैन, उम्मे कुलसूम को अपनी यादगार छोड़ा एक पुत्र मुहसिन बचपन में ही देहान्त कर चुके थे.

प्रश्न –

1. सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कितने पुत्र जन्में एवं उनके नाम क्या है ?
2. खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से कितनी पुत्रियाँ जन्मी एवं उनके नाम क्या हैं ?
3. रुक़ैया तथा उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा से सम्बंधित तुम्हे क्या ज्ञात है ?
4. फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से संबधित तुम्हें क्या ज्ञात है ?
5. हसन, हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा का सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से क्या संबंध है ?

पाठ 9

ईशदूत पद एवं उद्देश्य

जब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आयु 40 वर्ष 7 माह की हुई तो विश्व प्रतिपालक ने 'गारे हिरा' (हिरा नामक घाटी) में ईश्वरीय दूत होने का ताज पहनाया. जिब्रील अ.सलाम सूरह ''इक़रा'' की प्रारंभिक आयतें लेकर आप पर उतरे तथा यहीं से आपके ईश्दूत होने की आरंभिकी हुई. यह शुभ घटना 21 रमज़ान मुबारक सोमवार की रात्रि मे घटित हुई 10 अगस्त 610 ई की दिनांक थी.

अब आप मुहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह से मुहम्मद ईशवरीय दूत एवं सन्देशटा हो गये, दूत पद की विशेषता अन्य सर्व विशेषताओं से सर्वोच्च हो गई. सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम.

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब अपने सन्देशटा होने की घोषणा की तो सर्व प्रथम जिन भाग्यशाली लोगों को आप पर ईमान लाने का दैव योग मिला उनमे एक आपकी पतनी ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं दूसरे आपके मित्र अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु तृतीय आपके चचेरे भाई अ़ली रज़ियल्लाहु अन्हु है चतुर्थ आपके नौकर जैद पुत्र हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु है.

आपके दूत पद का उद्देश्य भी वही था जो आपके पूर्व सर्व दूतों एवं सन्देशटाओं अलैहिमुस्सलाम का था कि लोगों को

एकेश्वरवाद अपनाने तथा भागीदार बनाने से बचने की ओर बुलायें. उदाहरणतः सूरह नहल मे ईश्वरीय वर्णन पर्याप्त हैं .

﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ﴾ [النحل: 36]

अनुवादः हमने हर उम्मत में एक सन्देशटा प्रेषित किया यह बताने के लिये कि लोगो मात्र एक ईश्वर की उपासना करो तथा उसके अतिरिक्त पूज्यों से दूर रहो. (सूरह नहल : 36)

अतएवं यही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आहवान का नीवी दृष्टिकोण था. तथा आप उसी आहवान को सम्पूर्ण करने हेतु सर्वसंसार हेतु रहमत एवं अंतिम सन्देशटा बनाकर ईश्वर की ओर से प्रेषित किये गये थे.

सल्ललाहु अलैहि वसल्लम–

प्रश्न –

1. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सन्देशटा होने की प्रारंभिकी कब एवं किस प्रकार हुई ?
2. शुभ कुर्आन की प्रारंभिक आयते कहाँ एवं किस दिनांक को उतरी ?
3. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आहवान का नीवी दृश्टिकोण क्या था ?
4. सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सर्वप्रथम ईमान लाने वाले भाग्यशाली लोग कौन कौन थे?

पाठ 10

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कौन थे?

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक मनुष्य थे सबसे महान मनुष्य, आप ईश्वर के एक भक्त थे सबसे सम्पूर्ण भक्त, आप ईश्वर के एक दूत थे सबसे सम्मानित एवं सबसे अंतिम दूत, आपके पश्चात दूतपद एवं सन्देशटा सूत्र समाप्त है.

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक व्यक्ति थे तथा हमारी ही भाँति व्यक्ति परन्तु ईश्वर की शरण इसका यह अर्थ कदापि नही कि कृत्य एवं व्यवहारिक रुप से ज्ञात एवं परिचय संयम एव डर ईश्वर के निकट पद एवं श्रेणी तथा उससे संबंध में आप हमारी ही भाँति थे तथा जैसा प्रेम एवं सम्मान हम आपस में एक दूसरे का करते हैं वैसा आप के साथ भी करना चाहिये बल्कि इसका अर्थ यह है कि जिस प्रकार सर्व मनुष्य सृष्ट एवं आदम की सन्तान हैं इसी प्रकार आप भी थे. जिस प्रकार सर्व मनुष्य के माता, पिता एवं कुटुम्ब के लोग होते है उसी प्रकार आपके भी थे आप भी एक मनुष्य की भॉति अपनी माता की कोख से जन्मे, पले, बढ़े, जवान हुये. आयु ढली एवं मृत्यु हुई. إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी आदि व्यक्तियों की भॉति व्यक्तिगत आवश्यकतायें पड़ती थीं आपको भूख, प्यास

लगती थी. भोजन करते नीर संचते मूत्र एवं शौच की आवश्यकता होती, बीमार पड़ते थे प्रसन्नता एवं दुखद की परिस्थितियाँ भी आतीं आदि–परन्तु ईश्वर ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अपनी कृपा एवं उपहार किया कि आप पर अपनी ''वही'' (आकाशवाणी) उतारी– तथा आपको अपना अंतिम सन्देशटा घोषित किया – सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम –

प्रश्न –

1. मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कौन थे ?
2. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मनुष्य होने का क्या अर्थ है ?
3. क्या सन्देशटा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को व्यक्तिगत आवश्यकतायें पड़ती थीं ?

पाठ 11

हिजरत

जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने झूठे पूज्यों को अस्वीकार करने तथा मात्र एक ईश्वर की पूजा स्वीकारने का आहवान प्रारंभ किया तो काफिरों (मूर्तियो के पूजारियों) ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा आपके संग वालों रज़ियल्लाहु अन्हुम को प्रताणित करना आरंभ कर दिया –

कोई मुसल्मान ऐसा न था जो उनके अत्याचार से बच सके– जब दुखदा असीमित हो गयी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को हबशा को हिजरत की आज्ञा दे दी. तथा स्वयं मक्का में ही ठहरे रहे कि संभवतः मक्का वाले भविष्य में सत्यमार्ग पर आजायें परन्तु कुफ्फार ने अब अनुवंध किया कि खाने की कोई वस्तु मुसलमानो तथा उनके सहयोगियों को विक्रय न किया जाये. इसी कारण वश आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पतनी एवं सन्तान सहित एक पर्वतीय घाटी ''शिअबे अबी तालिब'' में शरण ली तथा तीन वर्ष तक उसी में घिरे रहे. कोई ऐसी विपता न थी जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा आपके घर वालों ने न झेली हो अंततः घेराबंदी समाप्त हुई उस समय आपकी आयु 49 वर्ष की थी.

इस घटना के कुछ ही महीनों पश्चात चाचा 'अबू तालिब' एवं तदोपरान्त पत्नी खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का भी देहान्त हो गया.

अब कुफ्फार का उत्साह अत्याधिक बढ़ गया अंततः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ''ताइफ'' की ओर रुख किया तथा सत्यसंदेश सुनाया परन्तु वह लोग मक्का वासियों से अधिक कठोर हृदय वाले ठहरे.

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दोबारा मुतइम पुत्र अदी की शरण में मक्का मे प्रवेश किये उसके पश्चात 'मेराज' (आकाशीय यात्रा) हुई तथा पाँच समय की 'सलात' अनिवार्य हुई –

ताईफ से लौटने के पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम निरन्तर ''मक्का'' में ही ठहरे रहे. हर तरफ से विपता एवं घोर कठिनाइयों का सामना था. सब कुछ सहन करते थे परन्तु सत्य की ओर आहवान करने से न रुके अंततः ईश्वर ने मदीना के ''अंसार'' (सहयोगियों) को इस्लाम स्वीकारने का दैवयोग प्रदान किया तदोपरान्त 'सहाबा' को मदीना की ओर हिजरत की आज्ञा प्रदान की गई तथा टोलियों की टोलियाँ गुप्त रुप से रवाना होने लगीं .

सत्य धर्म की इस प्रकार उन्नति तथा मक्का वासियों की इस प्रकार कठोरता एवं अत्याचार के उपरान्त ईश्वर ने अपने सन्देशटा को भी हिजरत की आज्ञा प्रदान कर दी. यात्रा से पूर्व आप अबूबकर के साथ षौर नामक सुरंग (ग़ारे सौर) में रहे. फिर दरिया किनारे के मार्ग से रवाना हुये. अबूबकर सिद्दिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु उनके नौकर आमिर पुत्र फुहैरा एवं मार्गदर्शक अब्दुल्लाह पुत्र उरैकित

आपके साथ थे– 'मदीना' के निकट पहुँचकर 'कुबा' नामक गाँव मे ठहरे 14 दिन तक पड़ाव रहा तथा मस्जिद कुबा की नेव रखीश्शुक्रवार के दिन मदीना संकल्प किया वहाँ पहुँचकर अबू अय्यूब अंसारी के आवास में ठहरे. फिर ''मस्जिदे नबवी'' की तामीर की. मस्जिद से सटाकर अपनी कोठरी बनाया तथा उसी के निकट एवं पड़ोस में पवित्र पतनियों (रज़ियल्लाहु अन्हुन्न) हेतु भी कोठरियाँ बनाई. सात महीने पश्चात अबू अय्यूब अंसारी के आवास से अपनी कोठरी में स्थानाँतरित हो गये.

सन्देशटा घोषित होने के पश्चात लगभग 13 वर्ष तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का में रहें हिजरत के समय आपकी आयु 53 वर्ष की थी.

प्रश्न –

1. मुसलमानो ने मक्का से क्यों हिजरत की ?
2. सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम 'शिअबे अबी तालिब' में कितने वर्ष घिरे रहे ?
3. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चाचा अबू तालिब एवं पतनी खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का देहान्त कब हुआ ?
4. सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिजरत का संक्षिप्त मे वर्णन करो ?
5. हिजरत के समय सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आयु क्या थी ?

पाठ 12

युद्धात

ईश्वरीय सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने जीवनकाल में ईश्वरीय कथन की सर्वोच्चता हेतु अत्यन्त युद्धें की हैं जिनको ग़ज़वा कहा जाता है –

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रसिद्ध युद्धायें निम्नलिखित हैं .

(1) युद्ध बदर –

यह रमज़ान सन 2 हिजरी की घटना है इसमें मुसलमानों की संख्या तीन सौ तेरह 313 थी. तथा काफीरों की संख्या एक हजार 1000 थी. इसमे ईश्वर ने मुसलमानो को विजय प्रदान की 22 बाइस मुसलमान शहीद हुये जबकि 70 काफिर हत्या के घाट उतारे गये एवं 70 कैद किये गये.

(2) युद्ध उहद

यहश्शव्वाल सन 3 हिजरी की घटना है इसमे मुसलमानो की संख्या 650 छः सौ पचास तथा काफिरों की 3000 तीन हजार थी. इस युद्ध में मुसलमानों को हानि पहुँची 40 चालीस ज़ख़्मी 70 सत्तरश्शहीद हुये परन्तुश्शत्रु दहशत खाकर विफल हुये तथा उनके 30 तीस आदमी हत्या के घाट उतारे गये.

(3) युद्ध बनी मुस्तलिक़ –

यहश्शाबान सन 5 हिजरी की घटना है इसमेंश्शत्रु पराजित हुआ उसके 10 आदमी हत्या किये गये तथा 19 बंदी बनाये गये परन्तु बाद में सबको मुक्त कर दिया गया.

(4) युद्ध अहज़ाब –

इसका द्वितीय नाम युद्ध ख़न्दक़ (खाई) भी है यहश्शव्वाल या ज़ीक़ादा सन 5 हिजरी में घटित हुई . इसमें मुसलमानो की संख्या 3000 तीन हजार तथा काफिरों की 10000 दस हजार थी. 6 मुसलमान शहीद हुये दस काफिरों की हत्या की गई तथाश्शत्रु विफल होकर वापस हुआ.

(5) युद्ध बनू कुरैज़ा –

यह युद्ध अहजाब के तुरन्त प्श्चात की घटना है बनू कुरैजा यहूदी थे एवं मुसलमानों से अनुबंधित थे. इन्होने मुसलमानो के संग गद्दारी की अतः उनके सर्व पुरुषो की हत्या की गई महिलाओं एवं बालकों को बंदी बना लिया गया.

(6) युद्ध हुदैबिया –

यह जीकादा सन 6 हिजरी की घटना है इसमे सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संग 1400 सहाबा उपस्थित थे. इसका परिणाम यह हुआ कि कुरैश ने दस 10 वर्ष के लियेश्शांति एवं सुलह का अनुबंध कर लिया एवं सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम 'मदीना' लौट आये .

(7) युद्ध खैबर –

यह मुहर्रम सन 7 हिजरी की घटना है. इसमें मुसलमानों की संख्या 1400 चौदह सौ तथाश्शत्रू यहूदियों की संख्या 10000 दस हजार थी. 50 पचास मुसलमान जख्मी 18 अठ्ठारहश्शहीद हुये. 93 तिरानवे यहूदियों की हत्या की गई तथा मुसलमानों को विजय प्राप्त हुई ।

(8) युद्ध विजय मक्का –

यहश्शुभ रमजान 8 हिजरी की घटना है इसमें सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संग 10000 दस हजार सहाबा की सेना थी. 12 काफीर कत्ल एवं 2 मुसलमानश्शहीद हुये. तथा मक्का पर विजय प्राप्त हुई.

(9) युद्ध हुनैन –

यहश्शव्वाल सन 8 हिजरी की घटना है. इसमें सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संग 12000 बारह हजार की सेना थी. 71 काफिर कत्ल 6 मुसलमानश्शहीद हुये. 6000 छः हजार बन्दी बनाये गये. परन्तु सबको बिना मुआवजा मुक्त कर दिया गया.

(10) युद्ध तबूक –

यह रजब सन 9 हिजरी की घटना है इसमें प्रिय सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ 30000 तीस हजार की सेना थी. रूमी दहशत खा गये एवं मुकाबले पर नहीं आये.

ईश्वरीय सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन युद्धों द्वारा पूरे अरब देश मे अमन वश्शांति स्थापित किया उग्रवाद एवं फितनों की आग बुझाई. इसलाम एवं मूर्ति पूजा की घमासान में शत्रू कीश्शान तोड़कर रखदी तथा उन्हें इसलामी आहवान एवं उसके फैलाव की राह को स्वतंत्र करने तथा अमन वश्शांति के अनुबंध पर विवश कर दिया.

इसी प्रकार इन युद्धों द्वारा यह भी ज्ञात कर लिया कि आपका सहयोग करनेवालों मे कौन लोग मुखलिस अर्थात हृदय एवं आत्मा के संग आपके साथ हैं तथा कौन लोग मुनाफिक़ अर्थात दिखावटी एवं बनावटी हैं .

प्रश्न –

1. ग़ज़वा किसे कहतें हैं ?
2. किसी पाँच ग़ज़वा का नाम बताओ ?
3. युद्ध बदर से संबंधित तुम्हे क्या ज्ञात है ?
4. युद्ध अहजाब में मुसलमानो तथा काफिरों की संख्या क्या थी तथा परिणाम क्या निकला ?
5. युद्ध बनी कुरैजा का संक्षिप्त में वर्णन करो ?
6. युद्ध हुनैन से संबंधित तुम्हे क्या ज्ञात है ?
7. इन युद्धो से क्या लाभ हुआ संक्षिप्त नोट लिखो.

पाठ 13

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कौनसी पुस्तक उतरी ?

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर शुभ कुरआन जैसी विशाल पुस्तक उतरी जो तबसे अबतक उसी प्रकार बिना किसी रद्द व बदल के हमारे पास है तथा प्रलय तक इसी प्रकार सुरक्षित रहेगी. इन्शाअल्लाह (अगर ईश्वर ने चाहा) तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दूत एवं सन्देशटा होने की साक्षी रहेगी. शुभ कुरआन क्या है? संक्षिप्त में स्पष्ट किये देता हूँ – (गुप्त रहस्यों हेतु अरबी पढ़ो तथा शुभ कुरआन के अनुवाद एवं व्याख्याओं से मन, मस्तिष्क को उज्जवल करो.)

शुभ कुरआन दिन सोमवारश्शुभ रमजान की 21 वी रात 10 अगस्त 610 ई. से उतरना आरंभ हुआ उतरने की कुल अवधि 22 वर्ष 5 महीने है.

श्शुभ कुरआन के कुल पारे (भाग)	30
श्शुभ कुरआन के कुल सूरतें	114
श्शुभ कुरआन की मक्की सूरतें	86
श्शुभ कुरआन की मदनी सूरतें	28
श्शुभ कुरआन की कुल आयतें	6236
श्शुभ कुरआन के कुल ''अल्लाह''श्शब्द	2697

श्शुभ कुरआन के कुल कलिमात	77439
श्शुभ कुरआन के कुल हुरुफ शब्द	320670
श्शुभ कुरआन के कुल सजदे	15

प्रश्न –

1. ईश्वर ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कौनसी पुस्तक उतारी ?
2. शुभ कुरआन के कितने पारे (भाग) है ?
3. शुभ कुरआन में कुल कितनी सूरतें है ?
4. शुभ कुरआन के आयतों की संख्या क्या है ?
5. शुभ कुरआन में कितने सजदे हैं ?
6. शुभ कुरआन मे कुल कितनेश्शब्द तथा कितने कलिमात है ?

पाठ 14

जीवन के कृत्य (कृत्यावन जीवन)

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर में सूचना देकर प्रवेश करते अचानक न घुस जाते कि लोग अज्ञात हों. जब अन्दर पहुँचते तो सलाम करते. जब किसी अन्य के यहाँ पधारते तो सीधे द्वार के सामने न आ जाते बल्कि दायें बायें से आते तथा ''अस्सलामु अलैकुम'' कहते. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत थी कि जब किसी बैठक में पधारते तो सलाम करते. तथा जब जाते तो सलाम करते. सदैव जबान से बोलकर जवाब देते. हाथ या उंगली के इशारे से अथवा शीश हिलाकर कभी जवाब न देते किन्तु मात्र सलात की अवस्था में इशारे से जवाब दे देते थे. जब कोई किसी अन्य का सलाम पहुँचाता तो सलाम करनेवाले एवं पहुंचाने वाले दोनो को जवाब देते थे. जब आपको छींक आती तो मुँह पर हाथ या कपड़ा रख लेते जिससे यातो आवाज़ पूर्णतयाः दब जाती या अधिकतम कम हो जाती.

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कभी बिस्तर पर सोते कभी चटाई पर कभी भूमि पर– बिस्तर के अन्दर खजूर के छिलके भरे होते थे. दायें करवट पर लेटते थे दायाँ हाथ गाल के नीचे रखते. जब सोकर उठते तो दातून करते आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दातून अधिकतर करते. आपकी विधि थी कि रात्री के पहले पहर सो जाते तथा पिछले पहर से पूर्व ही उठ जाते. परन्तु यदि

मुसलमानों के कुछ कार्य रात्रि में करने होते तो देर से सोते. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नयन सोते हृदय सदैव जागुरुक रहता था इसी कारण जब आप सो जाते तो कोई न उठाता यहाँ तक कि आप स्वयं उठ जाते.

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सदैव अच्छे नाम पसंद फरमाते बुरे नाम रखने से वर्जित करते यदि कोई नाम पसंद न आता तो उसे बदल देते. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भूमि पर खड़े होकर भी खुतबा दिया (संबोधित किया). मिम्बर पर से भी तथा उंट की पीठ पर से भी. हर संबोधन ईश्वरीय गुण गाकर ही प्रारंभ करते. संबोधन कभी विस्तारित होता कभी संक्षिप्त.

संबोधित करते समय कभी असा (छड़ी) पर टेक देते कभी कमान पर.

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अति सटीक कथन तथा गुणयुक्त भाषण देते, ठहर ठहर कर बोलते, एक एक शब्द इस प्रकार अलग अलग करके बोलते कि सामने वाला पूरी तरह बात याद कर लेता, अधिकतर एक बात को तीन बार दोहराते ताकि मस्तिष्क में भली भाँति बैठ जाये, अनावश्यक कभी न बोलते, अधिकतर चुप रहते, शब्द जचे तुले होते उद्देश्य से एक शब्द न कम होता न अधिक, यदि कोई बात नापसंद होती तो चेहरे का रंग बदल जाता शा दुराचार, कठोर गंदी बातों तथाश्शोर, गुल से आप बहुत दूर थे, हंसी बस यहाँतक कि होठों से मुस्कुरा देते. यदि

इससे अधिक हंसते तो बाछें खुल जातीं, खिलखिलाकर न हँसते, इसी प्रकार रोना भी था. दहाड़ें मारना या हिचकियों से रोना न था मात्र नयना आंसुओं से भर जाती यदि इससे अधिक हुआ तो आंसू टपक जाते, तथा रोने की आवाज सीने से ज्ञात होती. रात्रि की सलात (तहज्जुद) में अधिकतर रोया करते.

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तीव्र गति से चलते थे ऐसा ज्ञात होता कि पहाड़ी की ढलान से उतर रहे हैं, आप जूता पहन कर भी चलते तथा नंगे पाँव भी, यह विधि थी कि जब सहाबा साथ होते तो उन्हें आगे करते तथा स्वयं पीछे चलते, दुर्बलों का सहयोग करते, पैदल चलने वालों को अपने साथ सवार कर लेते उनके हक में दुआ फरमाते.

बैठने का कोई विशेष प्रबंध्न न था कभी फर्श पर कभी भूमि पर कभी चटाई पर, लेटने सोने का भी कोई अतिरिक्त प्रबंध न था.

प्रश्न –

1. सलाम करने संबंधित आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत क्या थी ?
2. सोने संबंधित आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क्या विधि थी?

3. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बातचीत एवं संबोधन संबंधित तुम्हे क्या ज्ञात है ?
4. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रोने एवं हंसने का वर्णन करो ?
5. सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चलने संबंधित तुम्हे क्या ज्ञात है ?

पाठ 15

पूजा अर्चना

सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईश्वर की याद अर्चना में सर्वाधिक रहते थे. अधिकतर तकबीर, तहलील, तसबीह, तहमीद, हौकला, इस्तिगफार के साथ साथ हर समय की अतिरिक्त अर्चनायें करते. सोते, जागते, उठते बैठते, चलते फिरते, सर्वस्थिति मे तथा सर्वाकाल ईश्वर की अर्चना किया करते.

सलात से संबंधित आपकी यह विधि थी कि कम से कम चालीस रकअतें प्रतिदिन पढ़ा करते थे 17 रकअतें फर्ज (अनिवार्य) 12 बारह रकअतें सुन्नते मुवक्कदा (सदैव) तथा ग्यारह रकअतें तहज्जुद (रात्रि की सलात)– आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रतिदिन का कृत्य था. इनके अतिरिक्त भी अन्य नफल सलात जुहा आदि पढ़ा करते थे किन्तु इसका विशेष प्रबंध न था.

दान, दक्षिना से संबंधित सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कृत्य यह था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जो कुछ होता दान कर देते जो भी व्यक्ति मांग लेता उसे दे दिया करते. लेने वाले को जितनी प्रसन्नता होती उस से अधिक आप को देने मे होती थी.

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने संसार हेतु ''ज़कात'' का अतिसम्पूर्ण संविधान प्रस्तुत किया, जिसमें धनवानों एवं निर्धनों दोनों की आवश्यकताओं का पूर्ण रुप से ध्यान रखा गया है –

सौम (वर्त) से संबंधित आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह कृत्य था कि कोई महीना वर्त रखे बिना नहीं बीतता था विशेष कर सोमवार एवं गुरुवार को वर्त रहते, रमजान के महीने का वर्त तो फर्ज (अनिवार्य) ही है. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वर्त के अतिरिक्त भिन्न प्रकार की पूजायें किया करते. शुभ कुरआन की तिलावत (पढ़ना) जिक्र तसबीह, तथा सदका दान आदि के अतिरिक्त ऐतकाफ़ भी बैठते थे. सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने जीवन मे चार 4 बार उमरा तथा सन 10 दस हिजरी में आपने एक हज किया जो विदाई हज के नाम से प्रसिद्ध है इस हज में आपके साथ 1 एक लाख से अधिक सहाबा उपस्थित थे उनके समक्ष आपने एक विशाल ऐतिहासिक संबोधन दिया– जिसमें इस्लामिक संविधान की व्याख्या की जाहिली (इस्लाम से पूर्व) की रीति को नकारा, जान–माल, प्रतिष्ठा, इवं सम्मान की हुरमत की घोषणा किया. तथा सर्वोपस्थित गण से साक्ष्य लिया कि आपने सन्देशटा होने के कर्तव्यों का भली भाँति एवं सम्पूर्ण रुप से पालन कर दिया. फिर आकाश की ओर उंगली उठाकर ईश्वर को भी साक्षी बनाया.

जिक्र – तकबीर, तहमीद, तसबीह, इस्तगफार आदि करना

तकबीर – अल्लाहु अकबर, कहना.

तहलील – लाइलाह इल्लल्लाह, कहना.

तहमीद – अलहमदुलिल्लाह, कहना.

हौकला – ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह, कहना.

इस्तिगफार – अस्तग़फिरुल्लाह, कहना.

ऐतकाफ– मस्जिद के अन्दर इबादत की नीयत से ठहरना. रमजान के आखिरी दस दिनों का ऐतकाफ आपकी सुन्तत है.

प्रश्न –

1. तकबीर, तहलील, तसबीह, तहमीद तथा हौकला एवं इस्तिगफार का क्या अर्थ है?
2. सलात से संबंधित सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क्या विधि थी?
3. सौम से संबंधित सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क्या विधि थी?
4. सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कितनी बार हज एवं उमरा किया है?
5. विदाई हज किस सन में हुआ तथा उस में सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क्या संबोधन दिया?

पाठ 16

खान, पान एवं पहनाव–

शुभश्शरीर पर कमीस होती थीं जो अति मन भावक थीं उसकी बाहें मात्र हाथ के गटटों तक होती थीं. तंग बाहों तथा छोटे दामन का जुब्बा, कबा, लुंगी चादर तथा कुछ अन्य प्रकार के पहनावे भी उपयोग किये है.

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सर पर अमामा (पगड़ी) पहनते थें तथा अमामे का शिमला माथे के बीच पीठ पर रहता था.

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लाल धारीदार जोड़ा भी पहना है, हरा तथा काले रंग का कपड़ा भी एवं फरवा बालदार खाल भी कि जिसके किनारों पर रेशमी गोट भी लगी थी.

सफेद रंग का वस्त्र आपको सर्वाधिक पसंद था वैसे जिस प्रकार का भी वस्त्र मिल जाता पहन लेते. किसी विशेष प्रकार के वस्त्र के इच्छुक न थे. उनी, सूती, कत्तानी सर्व प्रकार के वस्त्र पहनते.

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहुमूल्य अति उत्तम वस्त्र भी उपयोग करते तथा अति कम मूल्य का भी यहाँ तक कि चकती लगा लेते. आप जूते मोजे भी पहनते थे आपने चाँदी की अंगूठी भी पहनी है जिसपर लिखा था ''मुहम्मद रसूलुल्लाह''.

खान पान में भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत यह थी कि जो भोजन उपलब्ध होता उसी को काफी समझते उपलब्ध को रदद न करते अनुपलब्ध का प्रबंध न करते पवित्र भोजन जो भी उपलब्ध करा दिया जाता खा लेते थे. यदि मनपसंद न होता तो हाथ उठालेते परन्तु उसकी बुराई न करते. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी किसी भोजन की बुराई नही की. जो मन भाया खा लिया अन्यथा चुपचाप छोड़ दिया. कई बार ऐसा हुआ कि घर में बिल्कुल भोजन न रहा कभी कभी तो भूख के कारण पेट पर पत्थर तक बाँध लिये तथा 3–3 दिन तक बिना भोजन किये भूखे रहे हैं – पानी सदैव बैठकर पीते किन्तु कभी कभार खड़े होकर पीना भी ज्ञातव्य हुआ है. जब पानी पीते तो प्याला मुँह से हटाकर 3 बार सांस लेते. बिस्मिल्लाह से आरंभ करते अलहमदुलिल्लाह पर समाप्त करते. तथा भोजन करने की भी यही विधि थी.

शौच संबंधित आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विधि यह थी कि कभी पानी से धोते कभी पत्थर से साफ करते जब यात्रा पर होते तो शौच हेतु दूर चले जाते यहाँ तक कि नज़रों से ओझल हो जाते, कभी कोई आड़ सामने रख लेते कभी झाड़ियों तथा पेड़ों की आड़ मे बैठते यदि कठोर भूमि पर पेशाब (मूत्री) करना होता तो छींटे उड़ने की शंका से किसी लकड़ी से खुदखुदाकर भूमि को नर्म कर लेते.

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैठकर पेशाब (मूत्री) किया करते थे सदैव बायें हाथ से इस्तिंजा (सफाई) करते. जब शौच के लिये बैठते तो उस समय तक वस्त्र न उठाते जबतक भूमि से अति निकट न हो जाते इसी प्रकार शौच के समय ''काबा'' की ओर मुँह तथा पीठ करना वर्जित फरमाते –

प्रश्न –

1. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पहनावे से संबंधित तुम्हे क्या ज्ञात है ?
2. सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अंगूठी किस वस्तु की थी तथा उसपर क्या लिखा था ?
3. खान, पान, में सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क्या सुन्नत थी ?
4. शौच से संबंधित आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क्या विधि थी ?

पाठ 17

उत्तम स्वभाव

कौशलता, कर्मठता, सहनशीलता, विजय पाकर क्षमा कर देना तथा दुखद परिस्थितियों मे सहन ये वह स्वभाव है जिनके माध्यम से प्रमेश्वर ने आपका पोषण किया था. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी स्वंय हेतु किसी से बदला नही लिया. किन्तु यदि प्रमेश्वर के अस्तित्व पर आकर्मण होता तो प्रमेश्वर हेतु बदला लेते. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क्रोध से अत्याधिक दूर थे. अतिशीघ्र प्रसन्न हो जाते थे.

दान, दया का कृत्य ऐसा था कि उसकी तुलना नही की जा सकती, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सर्वाधिक दाता दानी थे. साहस तथा वीरता में भी आपका स्थान सर्वोच्च एवं प्रसिद्ध था. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सर्वाधिक लज्जित एवं झुकी दृष्टी वाले थे. सर्वाधिक न्यायी, पाकदामन, सत्यवादी एवं कर्मठ थे. जिसको मात्र मित्रगण ही नहीश्शत्रू भी स्वीकार करते थे.

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सर्वाधिक विनम्र थे एवं अहंकार (घमण्ड) से दूर थे. रोगियों के पास जाते. निर्धनों के संग उठते बैठते. अधीनों, नौकरों के निमंत्रण को स्वीकारते. ''सहाबा'' के साथ बिना किसी विशेषता के सर्वसमान बैठ जाते.

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सर्वाधिक वचन बद्ध तथा नाता जोड़ने वाले थे. जनता के साथ अति दया एवं कृपा का

व्यवहार करते. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का स्वभाव अति उत्तम एवं सर्वागीण था. दुर कथन न करते न ज्ञात मे न अज्ञात में तथा बुराई का बदला बुराई से न देते थे. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने सहाबा की खोज, बीन रखते. जनता की परिस्थितियाँ प्राप्त करते. यदि कोई आपसे कुछ माँग लेता तो उसे दिये बिना या अच्छी बात कहे बिना न लौटाते.

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुखड़ा सदैव कोमल रहता न किसी की निंदा करते न लज्जित करते न बुराइयाँ ढूँढते. जो व्यक्ति अनुकूल बात करता उससे मुख फेर लेते.

अंततः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बेनजीर उत्तम स्वभाव से सुसज्जित थे. तथा इन्हीं गुणों एवं अच्छाइयों के कारण लोग आपकी ओर खिंच आते एवं अपने मनों मे आपका प्रेम ग्रहित करते.

प्रश्न –

1. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उत्तम स्वभाव का संक्षिप्त मे वर्णन करो ?
2. वीरता, दान, तथा अन्य गुणयुक्त स्वभाव में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क्या स्थान था ?
3. ऐसे कुछ दुराचार का वर्णन करो जिनसे सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दूर थे ?

पाठ 18

जीविका

प्रिय सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने 'मक्का' के जीवन काल में जीविका हेतु व्यापार तथा मजदूरी किया, आप का व्यापारिक माल शाम, यमन, हबशा, बहरैन, आदि जाता था.

मजदूरी से संबंधित आप ने फरमायाः ''मैं मक्का वालों की बकरियाँ 'चन्द कीरात' पर चराया करता था''. (सही बुखारी)

'मदीना' के जीवन काल में युद्ध द्वारा प्राप्त माल में से एक विशेष भाग आपके लिये होता था. इसी प्रकार अपनी शुभ पत्नियों को 'खैबर' की बटाई जमीन से सौ १०० वसक अनाज खर्च हेतु दिया करते. (बैहकी 6/116) एक वसक साठ साअ का होता है तथा एक साअ लगभग 2.500 कि.ग्राम का होता है इस प्रकार हमारे यहाँ के हिसाब से अनाज का वनज 150 कुन्तल हुआ.

इस हदीस से आप अनुमान लगा सकते हैं कि प्रिय सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के यहाँ कितना अनाज उपजता था तथा आप कितने धनवान थे. परन्तु उस के बावजूद आपकी बेनियाजी एवं अन्देखी की यह स्थिति थी कि कई कई दिनों तक घर मे आग नही जलती थी. मात्र जल एवं खजूर जीविका होती थी.

सत्य हैः

"सलाम उस पर कि जिस ने बादशाही में फकीरी की"

प्रश्न –

1. 'मक्का' के जीवन काल में जीविका हेतु आप ने क्या किया?
2. 'मदीना' के जीवन काल में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जीविका का क्या प्रबंध था?
3. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेनियाजी एवं अन्देखी की क्या स्थिति थी?

पाठ 19.

मृग रोग तथा मृत्यु

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रोग सर दर्द से प्रारम्भ हुआ तत्पश्चात इस तीब्र गति से बुखार चढ़ा कि कपड़े के ऊपर से हाथ नहीं रखा जाता था -आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस अत्यन्त पीड़ा से बेचैन हो कर आपकी पुत्री फ़ातिमा रजि० ने कहा! हाय मेरे पिता को कितनी पीड़ा है -आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया -आज के बाद तुम्हारे पिता को कोई पीड़ा न होगी -

जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रोग तीब्र हो गया तो आपने समस्त पत्नियों से आज्ञा चाही कि बाक़ी दिन "आइशा" रजि० के घर व्यतीत करें-अन्ततः सबने प्रसन्नता से आज्ञा प्रदान कर दी -आप का रोग काल 13 अथवा 14 दिवस का है -

मृत्यु पूर्व आपकी अन्तिम वसीयत यह थी कि सलात् (नमाज़) तथा अधीनो का ध्यान रखना -एवं फ़रमाया कि तुमसे पूर्वजों ने अपने सन्देशटा ओ एवं नेक लोगों की समाधियो को शीश नवाने का स्थान बना लिया था अतएवं तुम समाधियो पर मस्जिद न बनाना मैं तुम को इस से वर्जित करता हूँ -

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु 12 रबीउल अव्वल सन् 11 हिजरी 6 जून 632 ई दिन सोमवार पूर्वानह जबकि सूर्योदय होकर प्रकाश शील हो चुका था -
उस समय आपकी आयु 63 वर्ष की थी -

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन

انا للہ وانا الیہ راجعون

मृत्यु के समय आपका शीश " आईशा " रजि० की गोद में था आपकी मृत्यु से दुख एवं विपता का मानों पहाड़ टूट पड़ा तथा सर्व संसार में अन्धकार छा गया –

प्रश्न -

1. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोग के अन्तिम दिवस किसके घर में व्यतीत किये ?
2. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रोग की अवधि कितनी है ?
3. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अन्तिम वसीयत क्या थी ?
4. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु किस दिवस एवं किस दिनांक को हुई ?
5. सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु किस आयु में हुई?

पाठ 20

कफन, दफन

सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु के दूसरे दिवस गरस नामक कुऐं का पानी लाया गया तथा उसमें बैरी के पत्ते को मिलाकर आपको स्नान कराया गया (ज्ञात रहे कि आपको जीवन मे इस कुऐं का पानी अति प्रिय था.)

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने घर के सहन में यमनी कपड़े का एक पर्दा लटकवाया. अली रज़ियल्लाहु अन्हु तथा अपने दोनों पुत्रों 'फजल' एवं कुसुम को घेरे के अन्दर बुलाया. तथा पानी पहुँचाने एवं अन्य कार्य हेतु अबू सुफियान पुत्र हारिस, उसामा पुत्र जैद तथा आपके द्वारा स्वतंत्रित सालेहश्शुक्रान को भी सम्मिलित किया. शेष बनी हाशिम के लोग पर्दा के बाहर कार्य मे जुटे हुये थे. उसामा एवं सालेहश्शुक्रान पानी डालते थे तथा अब्बास एवं उनके दोनों पुत्र आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पलटते, स्नान के अंत में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पूर्णश्शरीर पर काफूर मला गया. तत्पश्चात सहूल नामक स्थान के बुने हुये 3 सफेद सूती वस्त्रों में आपको कफनाया गया तत्पश्चात ऊद एवं इतर से शुभ श्रीर को सुगंधित करके चारपाई पर लिटा दिया गया. स्नान पूर्व अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हेतु बगलीवाली समाधि

खोद कर तैयार कर दी थी स्नान एवं कफन के पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चारपाई समाधि के निकट रखी गई तथा 'सलात जनाज़ा' पढ़ी जाने लगी. सर्वप्रथम आपके घर के पुरुषों ने पुनः 'मुहाजिरीन' ने पुनः 'अन्सार' ने पुनः स्त्रियों पुनः बालकों ने जमाअत, जमाअत (टोली टोली) एवं बारी बारी (क्रमशः क्रमशः) सलात अदा की. जनाज़ा की इमामत किसी ने नही की न ही अज़ान व इकामत कही गई.

बुधवार की मध्यरात्रि को सलात जनाजा पूर्ण हुई तब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को समाधि के पाइताने से अन्दर प्रवेशित किया गया. समाधि मे उतारने वाले अली रज़ियल्लाहु अन्हु अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु तथा उनके दोनो पुत्र फज़ल एवं कुसम एवं आप द्वारा स्वतंत्रित सालेह शुक्रान भी थे.

शुभ समाधि 9 कच्ची ईंटों से बंद की गई तदोपरान्त कुदाल एवं हाथ से मिट्टी डालकर समाधि कोहान के समान बराबर कर दिया गया.

प्रश्न –

1. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किस पानी से स्नान कराया गया ?
2. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का किन वस्त्रों में कफनाया गया ?
3. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सलात जनाजा किस प्रकार पढ़ी गई ?
4. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की समाधि किस प्रकार बनाई गई ?

पाठ 21

मृतक आश्रित

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं अपने जीवन काल में अपने पास क्या रखते थे जो मरणोपरान्त छोड़ जाते. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कृत्य था कि जो कुछ आता निर्धनों एवं असहायों मे बाँट देते. स्वयं हेतु कोई सम्पत्ति न बनाते. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की घोषणा थी कि हम सन्देशटाओं का कोई आश्रित नहीं होता जो कुछ छोड़ा वह सदक़ा है किन्तु आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किताब व सुन्नत (कुरआन व हदीस) के रुप में शिक्षा का वह प्रकाश एवं हिदायत (मार्गदर्शिका) की वह सम्पत्ति प्रदान की है जिससे मानवता प्रलय तक लाभानवित होती रहेगी.

प्रश्न –

1. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मरणोपरान्त क्या छोड़ा ?
2. सन्देशटाओं के आश्रिता संबंधित सन्देशटा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क्या घोषणा थी?